10.53571/NJESR.2021.2.9.67-73

महाकवि भवभूति की रचनाएँ एवं सुक्तियां

भवभूति, संस्कृत के महान कवि एवं सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे । उनके नाटक, कालिदास के नाटकों के समतुल्य माने जाते हैं । भवभूति ने अपने संबंध में महावीरचरित की प्रस्तावना में लिखा है । ये विदर्भ देश के 'पद्मपुर' नामक स्थान के निवासी श्री भट्टगोपाल के पोते थे । इनके पिता का नाम नीलकंठ और माता का नाम जतुकर्णी था । इन्होंने अपना उल्लेख 'भट्टश्रीकंठ पछलांछनी भवभूतिनमि' से किया है । इनके गुरु का नाम 'ज्ञाननिधि' था । मालतीमाधव की पुरान प्रति में प्राप्त 'भट्टश्रीकुमारिल शिष्येण विरचित मिंद प्रकरणम्' तथा ' भट्टश्री कुमारिल प्रसादात्प्राप्त वाग्वैभवस्य उम्बेकाचार्यस्येयं कृति' इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि श्रीकंठ के गुरु कुमारिल थे । जिनका 'ज्ञानविधि' भी नाम था और भवभूति ही मीमांसक उम्बेकाचार्य थे जिनका उल्लेख दर्शन ग्रंथों में प्राप्त होता है और इस कुमारिल के श्लोकवार्तिक की टीका भी की थी । संस्कृत साहित्य में महान् दार्शनिक और नाटककार होने के नाते ये अद्वितीय है । पांडित्य और विदग्धता का यह अनुपम योग संस्कृत साहित्य में दुर्लभ है ।

शंकरदिग्विजय से ज्ञात होता है कि उम्बेक, मंडन सुरेश्वर, एक ही व्यक्ति के नाम थे । भवभूति का नाम 'उम्बेक' प्राप्त होता है । अतः नाटककार भवभूति मीमांसक उम्बेक और अद्वैतमत में दीक्षित सुरेश्वराचार्य एक ही हैं, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है ।

राजतरंगिणी के उल्लेख से इनका समय एक प्रकार से निश्चित सा है । ये कान्यकुब्ज के नरेश यशोवर्मन के सभापंडित थे, जिन्हें ललितादित्य ने पराजित किया था । 'गउडवहौ' के निर्माता वाक्यपतिराज भी उसी दरबार में थे। अतः इनका समय आठवीं शताब्दी का पूर्वार्ध सिद्ध होता है ।

परिचय

भवभूति पद्मपुर में एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे । पद्मपुर महाराष्ट्र के गोंदिया जिले में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है । अपने बारे में संस्कृत कवियों का मौन एक परम्परा बन चुका है पर भवभूति ने इस परम्परागत मौन को तोड़ा है और अपने तीनों नाटकों की प्रस्तावना में अपना परिचय प्रस्तुत किया है । 'महावीरचरित' का यह उल्लेख

'अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुर नाम नगरम् । तत्र केचित्तैत्तिरीयाः काश्यपाश्च-रणगुरवः
पंक्तिपावनाः चाग्नयौ धृतव्रताः सोमपीथिन उदुम्बरनामानो ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति ।
तदामनुष्यायणस्य तत्रभवतो वाजपेययाजिनो महाकवैः पंचमः सुगृहीतम् नाम्नो
भट्टगोपालस्य पौत्रः पवित्रकीर्तेनीलकण्ठ स्यात्मसम्भवः श्रीकण्डपदलांछनः
पदवाक्यप्रामणज्ञो भवभूतानाम जतुकर्णीपुत्रः ।...'

(अनुवाद: दक्षिणापथ में पद्मपुर नाम का नगर है । वहाँ कुछ ब्राह्मज्ञानी ब्राह्मण रहते हैं, जो तैत्तिरीय शाखा से जुड़े हैं, कश्यपगोत्री हैं, अपनी शाखा में श्रेष्ठ, पंक्तिपावन, पंचाग्नि के उपासक, व्रती, सोमयाज्ञिक हैं एवं उदुम्बर उपाधि धारण करते हैं । इसी वंश में वाजपेय यज्ञ करने वाले प्रसिद्ध महाकवि हुए । उसी परम्परा में पाँचवें भवभूति हैं जो स्वनामधन्य भट्टगोपाल के पौत्र हैं और पवित्र कीर्ति वाले नीलकण्ठ के पुत्र हैं । उनकी माता का जतुकर्णी है और ये श्रीकण्ठ पदवी प्राप्त, पद, वाक्य और प्रमाण के ज्ञाता है) ।

स्थितिकाल

भवभूति संस्कृत साहित्य जगत् की विलक्षण विभूति है । उन्होंने अपने नाटकों में अपना एवं परिवार का पर्याप्त परिचय दिया है, परन्तु अपने जन्म एवं स्थितिकाल की कोई सूचना नहीं दी है । फिर भी उपलब्ध अन्तः एवं बाह्य प्रमाणों के आधार पर उनका काल निर्णय किया जा सकता है । भवभूति की भाषा शैली पर बाणभट्ट का प्रभाव दिखाई देता है। भवभूति के तीनों नाटकों में प्रमुखतः मालती माधव में बाणट्ट की शैली का प्रभाव प्रतीत होता है । बाणभट्ट हर्षवर्धन (606-648 ई0) के दरबारी कवि थे । इसलिए बाणभट्ट का समय सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध है । बाणभट्ट ने हर्षचरित के आरम्भ में ही अपने पूर्ववर्ती कवियों एवं ग्रन्थों की चर्चा की है । उनमें भास, कालिदास, सातवाहन, प्रवरसेन एवं आढय राज आदि कवियों तथा वासवदत्ता सेतुबुंध तथा बृहत्कथा इत्यादि ग्रन्थों का उल्लेख किया है । परन्तु भवभूति एवं उनकी कृतियों का संकेत कहीं नहीं किया है । इससे पता चलता है कि भवभूति बाणभट्ट के परवर्ती नाटककार है ।

वामन ने अपने काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में भवभूति के पद्यों को उद्धृत किया है । पी.वी. काणे ने अपने उत्तरराम चरित की प्रस्तावना में वामन को 8वीं शताब्दी के आस-पास माना है । राजशेखर (880-920 ई0) ने बाल रामायण में अपने को भवभूति का अवतार माना है ।

कल्हण की राजतरंगणी के अनुसार भवभूति और वाक्पतिराज कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा यशोवर्मा के राजकवि थे । राजतरिड्.गणी से ज्ञात होता है कि कश्मीर के राजा ललितादित्य ने यशोवर्मा को पराजित किया था। डॉ. स्टेन ने इस घटना को 736 ई. के आस-पास निर्धारित किया है । यशोवर्मा के आश्रित वाक्पतिराज और भवभूति भी इसी समय होने चाहिए । वाक्पतिराज ने एक 'गउडवहो' नामक प्राकृतगाथा काव्य लिखा है, जिसमें उन्होंने भवभूति की बड़ी प्रशंसा की है । वाक्पतिराज के इस काव्य का समय इसमें वर्णित एक सूर्यग्रहण की गणना के आधार पर डॉ. जैकोवी ने 733 ई. निर्धारित किया है । निःसंदेह भवभूति इस समय से ही पूर्व ही रहे होंगे । इस प्रकार भवभूति के समय की पूर्व सीमा 606 ई. और परसीमा 733 ई. निर्धारित होती है ।

पाण्डित्य

'वाग्वैविभूति' के अनन्य आराधक भवभूति अनेक शास्त्रों के मर्मज्ञ थे । इनकी कृतियों में इनके अगाध पाण्डित्य का परिचय प्राप्त होता है । इनके पूर्वज अध्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे । भवभूति की ज्ञान गरिमा का आधार उनका पैतृक संस्कार था । उनके वैदिक एवं दार्शनिक ज्ञान का प्रवाह मालतीमाधव के प्रथम अंक में ही होने लगता है, यद्यपि वे इसके निरर्थक पाण्डित्य-प्रदर्शन के पक्ष में नहीं थे । वाणी उनकी जिह्वा पर वश-वर्तिनी बनकर रहती थी। उत्तररामचरित के भरतवाक्य में उनको 'शब्दब्रह्मविद्' कहा गया है । शास्त्र सिद्ध होने के साथ ही रससिद्ध कवि बनकर भवभूति ने नाट्य शास्त्र की परम्परा के विपरीत संस्कृत काव्यजगत् में एक नया आयाम स्थापित किया है । करुण को ही अंगीरस स्वीकार किया है एवं अन्य रसों को इनका विवर्तमात्र कहा है । उत्तर रामचरित में प्रयुक्त विवर्त वेदान्त के विवर्तवाद का संकेत देता है ।

मालती माधव के पंचम अंक में योग और दर्शन दोनों का सामंजस्य प्राप्त होता है । मालती माधव के ही नवम अंक में योग दर्शन के व्यवाहारिक ज्ञान का उद्धार प्रकट होता है । भवभूति सांख्य दर्शन के अच्छे ज्ञाता थे । उत्तर रामचरित के पंचम अंक में चन्द्रकेतु का यह वचन 'अपरेऽपि प्राचीनतम सत्व प्रकाशाः स्वयं सर्व मन्त्रदृशः पश्यन्ति' सांख्य के सत्वगुण का परिचायक है । न्यायदर्शन के शब्द निग्रहस्थान का प्रभाव भी सौधातकि और दाण्डायन के वार्तालाप में देखने को मिलता है ।

भवभूति वैदिक साहित्य में पारंगत थे । उनकी कृतियों में वैदिक ज्ञान का उल्लेख अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है । उत्तर रामचरित के द्वितीय अंक में बैराज लोकों का वर्णन ऋग्वेद के मंत्र के समान ही किया गया है । इसी प्रकार चौथे अंक में ऋग्वेद के मंत्र का ही अनुसरण है । महावीर चरित के प्रथम व द्वितीय अंक में इनकी अथर्ववेद की विद्वता प्रकट होती है । उनकी रचना में वैदिक शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है जैसे-''अरुन्धती- अक्षरं ते ज्योतिः प्रकाश्यातम्। सत्वां पुनातुदेवः परो रजसां यः एष तपति ।'' उनके नाटकों में औपनिषदिक ज्ञान का प्रभाव एवं मन्त्रों का सप्रसंग प्रयोग प्राप्त होता है । उत्तररामचरित में जनक के कथन 'अन्धतामिस्त्रा ह्यसूर्यानाम ते लोकाः प्रेत्य तेभ्यः प्रतिविधियन्ते य आत्मघातनि' इत्येव मृषयो मन्यन्ते ।'' में ईशावास्योपनिषद् के मन्त्र का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है । महावीर चरित के प्रथम श्लोक में ही उपनिषदों में वर्णित गूढ तत्वों का सन्निवेश है । उत्तररामचित के चतुर्थ अंक में अरुन्धती कथनबृहदारणयकोपनिषद का स्मरण कराता है । धर्मशास्त्र और राजनीति में निपुणपता उनकी रचनाओं में यथासन्दर्भ देखने को मिलती है । उनको वर्णाश्रम व्यवस्था के ज्ञान के साथ ही अतिथि सेवा अनुष्ठान नियम आदि का भी समुचित ज्ञान था । राजनीति में कुशलता का परिचय उत्तररामचरित के पांचवे अंक में देखने को मिलता है, जब दोनों कुमार एक दूसरे को लक्ष्य करके कहते हैं-

‘‘वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाधते ।‘‘ महाकवि को कामशास्त्र का अच्छा ज्ञान था । मालती माधव में अनेक स्थलों पर कामशास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है । सप्तम अंक में बुद्धरक्षिता का कथन ‘नववधू विरुद्धरभसोपक्रमस्खलन‘ कामसूत्र के नियमों का परिचायक है । उनकी कृतियों में अनेक सूक्तियां उनके नीतिपरक एवं मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य को प्रमाणित करती है । साथ ही, उन्होंने अपनी कृतियों की प्रस्तावनाओं में अपने को ‘पद-वाक्यप्रमाणज्ञ‘ ठीक ही कहा है अर्थात् वे व्याकरण (पद) मीमांसा (वाक्य) और न्याय (प्रमाण) के विद्वान थे । इस प्रकार भवभूति विविध शास्त्रों एवं विधाओं मंे पारंगत थे ।

रचनाएँ

भवभूति द्वारा रचित तीन नाटक प्राप्त होते हैं:

- महावीरचरितम्
- उत्तररामचरितम्
- मालतीमाधव

उत्तररामचरितम्

संस्कृत साहित्य में करुण रस की मार्मिक अभिव्यंजना में यह नाटक सर्वोत्कृष्ट है । इसमें सात अंकों में राम के उत्तर जीवन को, जो अभिषेक के बाद आरंभ होता है, चित्रित किया गया है जिसमें सीतानिर्वासन की कथा मुख्य है । अंतर यह है कि रामायण में जहाँ इस कथा का पर्यवसान (सीता का अंतर्धान) शोकपूर्ण है, वहाँ इस नाटक की समाप्ति राम सीता के सुखद मिलना से की गई है ।

महावीरचरितम्

इसमें राम विवाह से लेकर राज्यभिषेक तक की कथा निबद्ध की गई है । कवि ने कई काल्पनिक परिवर्तन किए हैं जिनसे चिरपरिचित रामकथा में रोचकता आ गई है ।

मालतीमाधव

यह 10 अंकों का प्रकरण है जिसमें मालती और माधव की कल्पनाप्रसूत प्रेमकथा है । युवावस्था के उन्मादक प्रेम का इसमें उत्कृष्ट वर्णन है । इसमें स्थान स्थान पर प्रकृति का विशेष वर्णन चित्र प्राप्त होता है ।

भाषा

भाषा और शैली के प्रयोग में इनकी विचक्षणता अद्वितीय है । सरल और क्लिष्ट, समाससंकुल गाढ़बंध और समासरहित दोनों प्रकार की शैलियों का इन्होंने उत्कृष्ट प्रयोग किया है- कहीं मधुर पदावली और कहीं विकट गाठबंध । साथ ही उनकी भाषा अवसर और व्यक्ति के

अनुरुप होती है । उनकी शैली में वाच्यार्थ की प्रधानता है किन्तु व्यर्थ का वागाडंबर नहीं । प्रकृति के घोर और प्रचंड रुप की ओर कवि का ध्यान अधिक है । साथ ही अर्थ के अनुरुप ध्वनि उत्पन्न करने में कवि का नैपुण्य पदे-पदे व्यंजित होता है ।

यह एक नाटक ही कवि की प्रतिमा और पांडित्य की अभिव्यक्ति के लिए अलं है । इन्होंने कहा है-'एको रसः करुण एवं' (करुणरस ही एकमात्र रस है) । इस नाटक में अनेक रसों का रस धारण करके करुण रस सहृदयों के हृदय पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है । अपने नाटक में प्रेम के जिस उच्च और आदर्श रुप की कवि ने प्रतिष्ठा की है वह अवस्था के साथ ढलता नहीं और भी पूर्ण तथा उदात्त रुप प्राप्त करता है । संभवतः यही कारण है कि कवि ने नारी के बाह्य सौंदर्य के वर्णन की और विशेष ध्यान नहीं दिया है और उसके ंअंतः सौंदर्य को ही उद्घाटित किया है । प्रेम की इस पवित्रता के साथ विश्वास की महिमा, हृदय की महत्ता, भाषा की गंभीरता और भावों के तरंगायित क्रीडाविलास में यह नाटक साहित्य में 'एको रसः करुण एव' के समान एक ही है ।

पाण्डित्य और प्रतिभा के धनी भवभूति के नाटकों में शास्त्रों का व्यापक ज्ञान, भाषा की प्रौढ़ता, भाव की गरिमा और निरीक्षण की सूक्ष्मता के कारण सरसता के स्थान पर गांभीर्य और उदात्तता विशेष प्राप्त होती है । संभवतः इन कारणों से उस समय कवि की रचनाएँ अधिक लोकप्रिय न हो सकी और उनके नाटकों का उस समय किसी राजसभा में अभिनय न हो सका । उज्जयिनी में के अवसर पर एकत्र पुरवासियों के समक्ष की उनके नाटकों का अभियनय हुआ और तदनंतर वे यशोवर्भा के राज्य में समादृत हुए । मालतीमाधव की प्रस्ताव में उनकी गर्वोक्ति 'ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्तयवज्ञाम् ।'

भवभूति की प्रमुख सूक्तियाँ

'अप्रिगावा रोदत्यिपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।'

चित्रवीथी प्रसंग में लक्ष्मण राम एवं सीता से वनवास की स्मृतियों को स्मरण करते हुए कहते हैं कि जनस्थान (दण्डकारण्य) में आपके चरितों से पत्थर भी रो पड़े थे । और वज्र का भी हृदय फट गया था ।

'एते हि हृदयमर्माच्छिदः संसारभावाः'

प्रस्तुत कथन में राम सीता से कहते हैं कि ये सं ासारिक भाव हृदय के मर्मस्थल को भेदन करने वाले हैं ।

'इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः ।'

प्रस्तुत पंक्ति में राम सीता की प्रशंसा करते हैं कि यह सीता घर में लक्ष्मी है, यह नेत्रों के लिए अमृत की शलाका है ।

'असुखमुत्पादयति दुर्जनः'

दुर्जन दुःख उत्पन्न करता है । यह कथन सीता का है राम लक्ष्मण के समक्ष ।

‘नान्यतः शुद्धिर्महतः तीर्थोदिंकं च वहिश्च‘

राम सीता के परिपेक्ष्य में कहते हैं कि तीर्थ जल और अग्नि ये अन्य पदार्थो से शुद्धि के योग्य नहीं है । अर्थात् इनकी पवित्रता के संबंध में संदेह करना भी पाप के समान है ।

‘नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा ।
मूछिर्न स्थितिर्न चरणैखताडनानि ।‘

श्रीराम सीता को लक्ष्य कर लक्ष्मण से कहते हैं कि सुगंधित पूर्ण का सिर पर रखा जाना स्वाभाविक सिद्ध है न कि पैरों से कुचला जाना ।

‘सत्तां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं वृतम्‘

जब दुर्मुख नामक गुप्तचर श्रीराम को सीता के संबंध में फैले लोकापवाद को कहता है तो श्रीराम सीता को त्यागने का निर्णय लेते हैं वे कहते हैं चाहे जो भी हो जनता को प्रसन्न रखना ही राजा का परम कर्तव्य है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1	उत्तररामचरित नाटक	डॉ. सत्यनारायण
2	उत्तररामचरित भाषा	सीतारामक्रत
3	उत्तररामचरितम् चन्द्रकला	विद्योतिनी टीका श्री शेषराज शर्मा शास्त्री चौखम्बा संस्कृत सीरिज
4	उत्तररामचरितम्	डॉ. शिवबालक द्विवेदी
5	वैदिक वाड्.मय का इतिहास	श्री रमाकान्त शास्त्री चौखम्बा विद्याभवन
6	उत्तररामचरितम्	कृष्णकान्त त्रिपाठी
7	उत्तररामचरितम्	डॉ. राममाधव पाण्डेय, डॉ. रविन्द्राय मिश्र
8	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. उमाशंकर 'ऋषि'
9	संस्कृत साहित्य का इतिहास	सेठ कन्हैया लाल पोछार नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
10	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. ए.वी. कीथ
11	संस्कृत नाटक	डॉ. ए.वी. कीथ
12	संस्कृत नाटकों में समाज चित्रण	डॉ. चित्रा शर्मा मेहर चन्द लछमन दास पब्लिकेशन्स नई दिल्ली
13	उत्तररामचरितम्	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
14	संस्कृत साहित्य का इतिहास	गोरेला वाचस्पति
15	संस्कृत साहित्य का इतिहास	साहित्य भण्डार मेरठ

शोध छात्र
मोहन लाल
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़ संस्कृत विभाग
मो. 9050094812
ई-मेल: pooniashastrimohan@gmail.com

शोध मार्गदर्शक
डॉ. सुभाष सैनी
एसोसियैट प्रोफेसर
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़ (राज.)